गीता जयंती महोत्सव के अवसर पर कुरूक्षेत्र में आयोजित कार्यक्रम के लिए माननीय अध्यक्ष महोदय का संबोधन

- हरियाणा राज्य की पुण्यभूमि कुरूक्षेत्र एक ऐतिहासिक धरती है। इस धरती पर हजारों वर्ष पूर्व भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए उपदेश आज भी हमारे जीवन का दर्शन हैं और आज भी हमें जीवन जीने की राह दिखाते हैं। मैं इस पवित्र धरती को नमन करता हूं।

- आज इस पावन मंच पर उपस्थित परम आदरणीय एवं श्रद्धेय महामंडलेश्वर ज्ञानानंद जी महाराज को भी मैं नमन करता हूँ, जिन्होंने अपने संपूर्ण जीवन को गीता के लिए समर्पित किया है और 'जियो गीता' के माध्यम से समाज को नई चेतना एवं प्रेरणा दी है।

- स्वामी ज्ञानानंद जी ने अपने उपदेशों के माध्यम से पूरे विश्व को जागरूक करने का जो अभियान छेड़ा है, उससे बड़ा अभियान कोई हो नहीं सकता।

- **इस अवसर पर मैं सबसे पहले इस महोत्सव के आयोजन के लिए हरियाणा सरकार एवं कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड तथा सभी आयोजकों, विशेषकर हरियाणा राज्य के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से इस महोत्सव को एक अंतरराष्ट्रीय पहचान दी है।**

- श्री गीता पर दुनिया के कई देशों के विश्वविद्यालयों में शोध हो रहे हैं और उन पर टीकाएं लिखी जा रही है। आचार्य ज्ञानानंद जी के सान्निध्य में कुरूक्षेत्र भी भविष्य में गीता शोध का एक बड़ा वैश्विक केंद्रं बनने जा रहा है, जहां पर श्रीमदभगवद गीता पर विस्तृत शोध भी किया जा सकेगा और देश-विदेश के लोग यहां आकर गीता के ज्ञान का अनुभव कर सकेंगे।

- **श्रीमद्भगवद्गीता 18 अध्यायों तथा 700 श्लोकों का एक छोटा-सा ग्रंथ है, परंतु इसकी महिमा विशाल है। यह भक्ति योग, ज्ञान योग और कर्म योग का अद्भुत संगम है।**

- **गीता को अक्सर धर्मग्रंथ के रूप में देखा जाता है, लेकिन मेरा मानना है कि यह पूरी मानवता के लिए वरदान है। गीता धर्म ग्रंथ से अधिक जीवन का एक अद्भुत दर्शन है। यह कोई पुस्तक नहीं, बल्कि हमारे जीवन का आधार है।**

- गीता हमें जीवन जीने का सही तरीका बताती है और यह हमें जीवन जीने की कला सिखाती है। गीता हमारा वह दिव्यतम ग्रंथ है, जिसमें हमारे पुरातन ज्ञान को बेहद प्रेरणास्पद तरीके से वर्णित किया गया है। जीवन का कोई भी तत्व या भाग ऐसा नहीं है जो गीता के मंत्रों में मौजूद नहीं है।

- **राष्ट्रपिता महात्मा गांधी श्रीमद भागवदगीता को माता मानते थे। उनका कहना था कि जो कोई इस माता की शरण में आता है, वह उसे अपने ज्ञानामृत से तृप्त कर देती है।**

- **गीता हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। यह हमारे मन में आए संशयों को दूर कर, हमें सही दिशा देती है। गीता मानव जीवन का वह मैनुअल है, जिसमें हमें हर समस्या, हर कठिनाई, हर उलझन का समाधान मिलता है।**

- **गीता केवल उपदेश नहीं, उपचार भी है। यह आस्था ही नहीं, बल्कि जीवन पद्धति भी है। गीता सोच ही नहीं, चिंतन और दिशा भी है।**

- **व्यक्ति के जीवन में गीता सार उसकी वह पाठशाला है, जहां पढ़कर वह अपनी जिंदगी को और बेहतर तरीके से जी सकता है।**

- **जो भी व्यक्ति अपने जीवन में गीता का अध्ययन करेगा, गीता के प्रति समर्पित रहेगा, निष्ठावान रहेगा, वही अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेगा।**

- **गीता को भारत में पंचम ग्रंथ के रूप में देखा जाता है। यही कारण है कि हर घर में गीता हमें किसी न किसी रूप में अवश्य मिलती है।**

- **मैंने भी गीता के कुछ अंश पढ़े हैं और कुछ समझने की कोशिश की है। मैं इसके गूढ़ अर्थ तो नहीं समझ पाया, परंतु जितना भी मैं पढ़ और समझ पाया हूं, मुझे लगता है कि यही जीवन का सत्य है।**

- **वर्तमान समय में जब व्यक्ति तनाव में रहे, अनिर्णय की स्थिति में रहे, उलझन में रहे, परेशानियों में रहे, भविष्य की चिंताओं में रहे, उस समय गीता सार पढ़ने से वह व्यक्ति तनाव से मुक्त होगा, भविष्य की चिंताओं से मुक्त होगा।**

- **महाभारत के युद्ध में भी जब अर्जुन संशय में थे, मोहग्रस्त होकर दुविधा में पड़ गए थे, तब महायोगी प्रभु श्री कृष्ण ने उन्हें गीता का ज्ञान दिया। दोनों के बीच संवाद हुआ, चर्चा हुई और उससे जो दिव्य ज्ञान की उत्पत्ति हुई, वह आज हजारों वर्षों बाद भी हम सभी के जीवन को प्रेरणा दे रही है।**

- **कृष्ण कृपा और कृष्ण इच्छा के बीच में मानव का जीवन पलता है। यही जीवन का सार है। हमारे जीवन में जब भी कुछ अच्छा होता है, तो उसे हम ईश्वर की कृपा मानते हैं और अच्छा नहीं होता है तब उस प्रभु की इच्छा समझते हैं।**
- **यही आध्यात्मिक ज्ञान हमें जीवन की राह दिखाता है। यदि यह आध्यात्मिक चेतना न हो, तब आदमी हर घटना पर तर्क-वितर्क करेगा और फिर अवसाद में चला जाएगा।**
- **पर यदि वह भगवान को पूरी तरह समर्पित होगा, तब वह कर्म की राह पर आगे बढ़ेगा।**
- **गीता का सार यही है कि हम कर्त्तव्यपथ पर निरंतर आगे बढें, कर्म का अहंकार भी न हो और फल की चिंता किए बिना अपने कर्त्तव्य का पालन करें।**
- इसका भावार्थ यह है कि जो भी व्यक्ति फल की इच्छा से कर्म करेगा और यदि उसके कर्म का अच्छा परिणाम नहीं निकलेगा, तो वह निराश हो जाएगा। यदि हम इस भाव से कर्म करते हैं कि मेरा दायित्व कर्म करना है, तब परिणाम नहीं आने पर भी कर्म के प्रति हमें विरक्ति नहीं होगी और इसलिए हम अपने लक्ष्य की ओर चलते रहेंगे। अपने कर्म को लक्ष्य मानकर चलने वाले व्यक्ति को एक-न-एक दिन सुखद परिणाम मिलता ही है।
- **मैं आप सबसे आग्रह करता हूँ कि आप किसी भी धर्म से हों, किसी भी पंथ या सम्प्रदाय के अनुयायी हों, किसी भी भाषा, प्रांत अथवा देश के हों, गीता के सार तत्व को अपने जीवन में आत्मसात करें।**
- मेरा मानना है कि जो व्यक्ति अपने आचरण में गीता के अमर संदेश का अनुसरण करेगा, उसका मन विषम परिस्थिति में भी स्थिर और शांत रहेगा और वह व्यक्ति अपने जीवन में सदैव सफलता प्राप्त करेगा।
- गीता का संदेश संपूर्ण मानव जाति के लिए बहुत उपयोगी है। यह पूरे विश्व के लिए आध्यात्मिक प्रकाश स्तम्भ है। आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति का सार तत्व है जो संपूर्ण विश्व को भारत की देन है।
- गीता भारतीय अध्यात्म का सबसे लोकप्रिय ग्रंथ है। गीता के वचन देश, काल और परिस्थितियों से परे हैं और जीवन के शाश्वत मूल्यों को धारण करते हैं।
- गीता एक वैश्विक ग्रंथ है। एक ऐसा वैश्विक ग्रंथ जिसका दुनिया की डेढ़ सौ से अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। यानि जो कोई भी एक बार गीता के सम्पर्क में आया, यह उसकी मार्गदर्शक बन गई। गीता ने उसका जीवन बदल दिया, उसके जीवन को कल्याण के मार्ग पर चलने की दिशा दे दी।

- यही बात मैं आज सभी से कहना चाहता हूं कि गीता को अपने प्रतिदिन का भाग बनाएं। गीता पढ़ने से मन में एक विश्वास जागृत होता है। आशा दिखाई देती है, जीवन में एक सकारात्मकता आती है।

- **भौतिकवाद और प्रतिस्पर्धा के इस डिजिटल युग में युवा पीढ़ी बढ़ते तनाव, असुरक्षा और संशय की स्थिति का सामना कर रही है। वह ज्ञान की प्राप्ति तो कर रही है, उसमें बौद्धिक क्षमता का विकास भी हो रहा है परंतु बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान से ही उनके अंदर का तनाव और अवसाद दूर होगा। इसलिए युवा पीढ़ी के लिए श्री गीता जी का अध्ययन सर्वाधिक उपयुक्त है।**

- श्री गीता हर मनुष्य के अंदर सही और गलत के बीच द्वन्द्व का समाधान करती है। ''क्या सही है और क्या गलत है? हम क्या करें और क्या नहीं करें? ऐसा द्वन्द्व हम सभी को परेशान करता है। संशय की ऐसी स्थिति में गीता का ज्ञान हमें नई राह दिखाती है, नई दिशा देती है।

- इसलिए जब भी किसी के मन में शंका उत्पन्न हो, जब भी आपको लगे कि आप किसी दोराहे पर खड़े हैं, अनिर्णय की स्थिति हो, तय नहीं कर पा रहे हों कि क्या करना है, कर्म भूल रहे हों, उद्देश्य से भटक रहे हों, पलायन का मन कर रहा हो तो गीता की ओर देखिए।

- **गीता से खुद को जोड़िए और वहां से मार्गदर्शन प्राप्त कीजिए। आप स्वयं महसूस करेंगे कि नई राहें खुल रही हैं, सही दिशा दिख रही है, नई प्रेरणा मिल रही है। आपको लक्ष्य दिखने लगेंगे, आप अपने उद्देश्य की ओर बढ़ने लगेंगे।**

- मेरा विश्वास है कि यह अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव सम्पूर्ण विश्व में गीता के आध्यात्मिक संदेशों के प्रचार-प्रसार में सफल सिद्ध होगा और संपूर्ण मानव जाति एवं समस्त विश्व के कल्याण के अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होगा।

- **यह अंतर्राष्ट्रीय पर्व हरियाणा, भारत और संपूर्ण मानव जाति के नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का उत्सव है। मैं एक बार फिर इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए राज्य सरकार, इसके आयोजकों और हरियाणा की जनता को बधाई देता हूं और यह आशा करता हूं कि सभी भारतीय अपने आचरण में गीता के संदेश का अनुसरण कर एक नए भारत और बेहतर विश्व के निर्माण में अपना योगदान देंगे।**

- **धन्यवाद।**